

॥चित हित वित प्रति अमिन दै ॥लीनो मोको
मोल ॥७॥ पुनि अज्ञहि अज्ञादई ॥ एक दिन उ-
न सर्वज्ञ ॥ सुराम करै पाटी गनन ॥ भाषा ध-
रि बल प्रज्ञ ॥ ८ ॥ जदपि हीन मति तदपि उन
अज्ञा पास्यो पार ॥ गनित सार भाषा करै ॥ य-
था बुद्धि अनुसार ॥ ९ ॥ दोष सकल यागुंथ के ॥ ली-
ने गुन करि मान ॥ गिर गूढ गंभीरता ॥ गुन ज्ञा-
नी सज्जन ॥ १० ॥ सोरदा ॥ विदित गूढ विस्तार
तजि ताते वाति जिती ॥ कियो गुंथ रख भार ॥
गनित सार लहि सुराम विधि ॥ ११ ॥ पंडित सुघर
उदार ॥ पढ़त सुनत यागुंथ की ॥ लीनो चूड़
सुधार ॥ दीन हीन मति जानि कै ॥ १२ ॥ अथ
अंक्यान संख्या ॥ दोहा ॥ एकरु दस शत
सहस गनि ॥ अयुत लक्ष प्रयु तौरु ॥ कोटि रु
अर्बुद अजु भनि ॥ खर्वनि खर्व सुतौरु ॥ १३ ॥
महा पद्म शंकरु जलधि ॥ अंतिज मध्य परार्ध
॥ १४ ॥ अथ संकलन विवकलन ॥ दोहा

अथ भाग द्वार विधि ॥ दोहा ॥ गुन्यगुनक
की गुन्यो फल ॥ भाज्य अंक सोरु जानि ॥ इक
भाजक इक भागफल ॥ गुनक गुन्य दोउ मानि
॥ २० ॥ भाज्य अंक मैं घटिरा कै ॥ जै गुन भाजक
अंक ॥ विहि गुन कहि लिखि प्रथम फल ॥ पुनि
ले भाग निसंक ॥ २१ ॥ उदाहरन ॥ चौपाई
भाज्य अंक सोरु सै बीस ॥ भाजक चारह के
धरि सीस ॥ इहि विधि भाग लायो बुधिईस
पायो सौ ऊपर पैतीस ॥ २१ ॥ न्यास २६ २०

१ प्रथम भागफल एक गुनो भाज्यस

घट्यो सो लिख्यो ४

३ द्वितीय भागफल तिगुनो ३ ६

घट्यो लिख्यो ६

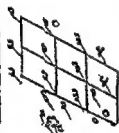
५ तीजो भाग पच गुनो ६६

घट्यो पायो फल ५

१ ३ ५ सो लिख्यो

यथा धान धरि जोरे ते पायो भागफल २३५

घेर एक एक अंक हूँ और
के भागफल से गुनिके इकाई
लाभ की नीचे के गुन्य में
और दहाई ऊपर के गुन्य में
से धरिये और दोनो मिल
रेखा के बीच बीच दीनिये
कही फल प्रदये



१८२०६ को मूल विधि
 में पहिले विषम मूल विधि
 को ऐसे ६८ ६० ६८ अंक के
 विषम चिह्न अंक दो २ को
 वर्ग चार ४ घटत है सो घटा
 ये ने बाकी रहे ऐसे ४८ ६० ६८
 पाये मूल को अंक दो २ को
 पहिले पाये वाको दूसरे को
 सम चिह्न अंक नौ धरि भाग
 लीनी नाको भाग फल पाये
 ६ ताको पहिले फल २ के
 पास यथा यान धृत्यो ऐसे
 २४ अंक याको चरी द्वितीय
 विषम अंक नाई घटाया सो
 रही ऐसे ४१०६ फिर १६ को
 दो को रिनी सरे सम अंक तरे
 धरि भाग ७ को पाये पुन य
 ७ को वर्ग नी सरे विषम चिह्नां
 क नौ घटाई तीनों अंक मुह
 अये पाये मूल अंक फल २४७
 याही अंक को वर्ग की नी हो

वर्ग के मूल को फल लहि पृथक् लिखाव ॥१४॥
 तिहि फल को पुनि सम तरे लेहु भाग करि दुना फल
 जु मिलै ताको वर्ग विषम तरे करि कुन ॥१५॥
 पुनि यह फल फल प्रथम संग यथा यान धरि
 दून ॥ करि पुनि धरि सम संकत ६ भाग लेहु
 करि न्यून ॥१६॥ ऐरो पंगति सुहलौ, किया
 करौ चित लाहु ॥ एक वर्ग दुक भाग करि, लहौ
 मूल विधि गाइ ॥१७॥ उदाहरन ॥ ८८२०६ के
 मूल को न्यास

८	८	२	०	६
वर्ग २ को	४			
बाकी	४			
भाग ६ गुनो	४	४	२	
बाकी	४	२		
भाग ७ गुनो	४	१०	६	

इति मूल
 अथ भिन्न किया विसम छेद विधि
 दोहा ॥ स्वांशहि तजि प्रतिहार करि हर अरु
 अंश गुनाव ॥ छेदन जब सम होइ सब, तब स

पाये मूल अंक
प्रथम फल
२ फल दूसरे
३ फल तीसरे
२४७ दीक मूल को

१. संपूर्णतः क
 हिये जो अक्षर आन्य
 और भागक में भाग पावे ता
 अंक की भाज्य भाजक में श्री-
 शलेन्द्र के भाज्य भाजक की
 लाघव की छोटी भाजक की
 कदमें यही छोटी भाजक की
 प्रवर्ति होवै हि यही भाजक
 भाव प्रतीकार लेवै जैसे
 या उदाहरण में सात को
 अंक है ॥ १४॥ १४ को कहिये पूर्ण
 भाव कहिये अंश सो
 भाजक को।

मखेद कहव ॥१८॥ अथवा काहू संकरिहारन
अपवत्तीइ ॥ पुनि पूरव विधि संशहर, अनिलाध-
व करि भाइ ॥१९॥ उदाहरन ॥ रूप तीन लव
पांच नय तुल्य हार करि जोरि ॥ लव वेसठ वौं नी
देहें, लव तैं घाटि व्होरि ॥२०॥ न्यास जोरि
वेलो ॥ ३/४/५/६/७/८/९/१०/११/१२/१३/१४/१५/१६/१७/१८/१९/२०/२१/२२/२३/२४/२५/२६/२७/२८/२९/३०/३१/३२/३३/३४/३५/३६/३७/३८/३९/४०/४१/४२/४३/४४/४५/४६/४७/४८/४९/५०/५१/५२/५३/५४/५५/५६/५७/५८/५९/६०/६१/६२/६३/६४/६५/६६/६७/६८/६९/७०/७१/७२/७३/७४/७५/७६/७७/७८/७९/८०/८१/८२/८३/८४/८५/८६/८७/८८/८९/९०/९१/९२/९३/९४/९५/९६/९७/९८/९९/१००/

ये ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ अंग जो भये ॥ १८ ॥
घटाद्व को न्यास ऐसे ॥ १९ ॥ २० ॥ तौ
करि अवर्त भये ॥ २१ ॥ २२ ॥ समष्टि कीये
भये ऐसे ॥ २३ ॥ २४ ॥ नवमे दोइ घटाए भये ॥ २५ ॥
सात करि अवर्त भए ॥ २६ ॥ अथ प्रभाग ज
त ॥ जहां भाग प्रतिभाग की - लहियै वहै प्र
भाग ॥ हर करि हर गुनिलवरु लव यहै सव
भाग ॥ २७ ॥ उदाहरन ॥ दस दल के दैन
लव के चरन चीन के पांच ॥ लव पुनि सोरह ता
सु को चरन दियो कहि सांच ॥ २८ ॥ न्यास

१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

० जैसे
गहरन में सात को
आंक है ॥ रूप कहिये पूर्ण
क ही सब कहिये अंग सो
हा कहिये आज का कौ।
समस्त क्रियाएँ करिये
प्रहिल के द्वार ३ ३ ३
अपनी स्वायं
छोड़ि चाखी अरा हरन
भये ऐसे ३ ३ ३
पांच के द्वार ३ ३ ३
ते स्वारा छोड़ि के बस्ती
के सब अंक गुने भये ऐसे
४५ ३ १५
२५ ३ १५

इस कहिये कहावन लोक
पनाई और एक पद की की
ही २० ऐसे मई —
कहावन की जोड़ी २२८०
दूसर पुनि इस की आवा
पुनि ता आवे की दु निहाई
पुनि ता है तिहाई की ती
न चौथाई पुनि ता सैं पां
ववां अंग पुनि ता पांच
वे अंग की सो हो अंग
पुनि ता सो हो अंग की
चौथाई भई कीड़ी एक
ता सैं रूप से एक दस
१२८ की १२८० कीड़ी
होन है

अथ ऊरुधरदातः अरवांश ऊन जुत किया करि

कैं भयो ऐसे

१७	५६	११२
२४	१६८	११२

अपवर्त्ते भवे

१	७	१
२	३	९

॥ अथ भिन्न गुनन सूत्र ॥

लव करि लव गुनि परस परहर करि हरहि गुना

इ। हर भाजक लव भाजको भाग गुनन फल भाइ

॥ २८ ॥ उदाहरन ॥ दोइ विनव जुत सौं गुनौ

सप्तमांश जुत दोइ। अवहर विनव दलवध लहौ

गुनन लाभ जौ होइ ॥ २९ ॥ न्यास

७	१५
३	७

गुने भये

१०५
३५

अपवर्त्ते भये

५
१

दूसरा

उदाहरन

१	९
३	३

गुने भये

१
६

अथ भिन्न भाग हार विधि। भाजकाक

अंश हर अदल बदल करि देहु ॥ भिन्न गुनन

विधि पुनि गुनहु भाज्य अंक फल लेहु ॥ ३० ॥

उ० सौत निहाई को लहौ भाग पाँच में भाइ ॥

विलवहि करि भागौ छलव कहौ भाग फल

चाहु ॥ ३१ ॥ न्यास

भाजक	भाज्य
७	५
३	१

भाजक अंश हार

वदलै ते भये

ऐसे

भाजक	भाज्य
७	५
३	१

गुने

दराइव कोहि नहि नहि
ते ताको पार करि
ताको गुनवो नहि
नो और घटाइ देनी ताकी
पिछा पूर्ववत् पहिले अवहर
र ताको ऊपर नर
गुन्यो मए २५ फेर खाट में
हे सांश र घटावो मए ७
या करि के ऊर्ध्व मए ७
न्यो मए २५ फेर २४ सौं गु
को ऊपर मए ७ फेर ७
नो मए १८ फेर ७ मेरे स्तं
र ३ घटावो मए ४ या को
के ऊपर को ऊर्ध्व १४ गुन्यो
मए २५ फेर ७ ना अपवर्तन
५६ ते कियो मए १
सीस उदाहरन घटाइव
जोरि दे लोह सु पहिले अथ
ऊपर घटाइ करि अ
धर घटै स्या १८ घटाइ
ऊर्ध्व सौं गुने मए ७
हे ७ फेर अथ ऊपर
गुने ७ सांश जोरि ऊ
पर गुन्यो मए २५ फेर
नो लव भयो ऐसे

अथ शून्य प्रकरणे ॥ नैमके भागरुजोग में रहे अंक सोइ जानि ॥ शेष भाज्य नमं कोनं भै गुननवर्ग नमं मानि ॥ ३५ ॥ नमं भाजक नमं गुनक जौ किहू अंक की होइ ॥ जैसे कौतै सोर है अंक सुजानौ लोइ ॥ ३५ ॥ उदाहरन ॥ खंग निजोरि निज दल चतुरि करौ तीन कौ घात ॥ खं की भागने सठ भये कोन अंश सो भ्रात ॥ ३६ ॥ न्यास ॥ गुनक ० दोषक ३ गुनक ३ भाग ० दृश्य ६३ शून्य गुनक और शून्य भाजक दूरि करि कै जो अंक वच्यो ताकी विलोम

योग	०	५	५	वीक
योग	५	०	५	वीक
भाग	भाजक	भाज्य	५	फल
	०	५	५	फल
गुनन	गुनक	गुन्य	०	फल
गुनन	गुनक	गुन्य	०	फल
परि	०	०	०	फल
मूल	०	०	०	फल
	गुनक	५	भाजक	
	०	जैसे	०	
		निकले	०	

शून्य के एक वा
अंक में शून्य जोरि नै सेइ
प्रकर है ॥
और शून्य को वर्गवर्ग मूल
सब शून्य के नाइ -
और जो अंक में शून्य को भा
ग अथवा शून्य में अंक को
भाग नीति तो भाज्य भा
जक ज्यो के ल्यो रहे -
और अंक शून्य को गुनन
है शून्य के जाइ -
और शून्य को गुणन
है रहे -
और जो अंक को गुणक
और भाजक दोनों शून्य
होइ सो अंक ज्योका
सो रहे ॥

निजलवघट जुत यान में लवघट जुत करि के पावौ फल १५ ॥ अथ विलोम
 विधि ॥ गुन स्थान में भाग लै भाग स्थान गुनाव
 वर्ग यान में मूल करि मूल यान वर्गाव ३७ ऊन
 यान में योग करि योग स्थान वियोग ॥ दृश्य हि
 लहि इहि विधि उलटि राशहि पावत लोग ॥ ३८
 निजलवघट जुत यान में लवघट जुत करि मी-
 त ॥ तिहि हर करि लव वहै धरि पुनि विलोम
 विधि रीत ॥ ३९ ॥ अथ विलोम विधि उदा-
 ति गुन चरन त्रय जोग पुनि सात भाग विलो-
 न ॥ कृत बावन घटि मूल पुनि वसु जुत फल दस
 दून ॥ न्यास ॥ गुन ३ स्वांश जोग ३ भाग ७
 हीन ३ वर्ग ० हीन ५२ मूल जोग ८ दृश १०
 विलोम विधि करि पाई राश २८ अष्ट दृष्ट करि
 प्रच्छक कहै सुकरि किया दृष्ट अंक को द पाइ
 ॥ लहे लाभ को भाग लै दृष्ट रु दृश्य गुनाइ
 ॥ ४० ॥ पच गुन निज लव तीन घटि तामें
 दस को भाग ॥ राश विलव दल चरन

निजलवघट जुत यान में लवघट जुत करि मी-
 त ॥ तिहि हर करि लव वहै धरि पुनि विलोम
 विधि रीत ॥ ३९ ॥ अथ विलोम विधि उदा-
 ति गुन चरन त्रय जोग पुनि सात भाग विलो-
 न ॥ कृत बावन घटि मूल पुनि वसु जुत फल दस
 दून ॥ न्यास ॥ गुन ३ स्वांश जोग ३ भाग ७
 हीन ३ वर्ग ० हीन ५२ मूल जोग ८ दृश १०
 विलोम विधि करि पाई राश २८ अष्ट दृष्ट करि
 प्रच्छक कहै सुकरि किया दृष्ट अंक को द पाइ
 ॥ लहे लाभ को भाग लै दृष्ट रु दृश्य गुनाइ
 ॥ ४० ॥ पच गुन निज लव तीन घटि तामें
 दस को भाग ॥ राश विलव दल चरन

गुन स्थान में भाग लै भाग स्थान गुनाव
 वर्ग यान में मूल करि मूल यान वर्गाव ३७ ऊन
 यान में योग करि योग स्थान वियोग ॥ दृश्य हि
 लहि इहि विधि उलटि राशहि पावत लोग ॥ ३८
 निजलवघट जुत यान में लवघट जुत करि मी-
 त ॥ तिहि हर करि लव वहै धरि पुनि विलोम
 विधि रीत ॥ ३९ ॥ अथ विलोम विधि उदा-
 ति गुन चरन त्रय जोग पुनि सात भाग विलो-
 न ॥ कृत बावन घटि मूल पुनि वसु जुत फल दस
 दून ॥ न्यास ॥ गुन ३ स्वांश जोग ३ भाग ७
 हीन ३ वर्ग ० हीन ५२ मूल जोग ८ दृश १०
 विलोम विधि करि पाई राश २८ अष्ट दृष्ट करि
 प्रच्छक कहै सुकरि किया दृष्ट अंक को द पाइ
 ॥ लहे लाभ को भाग लै दृष्ट रु दृश्य गुनाइ
 ॥ ४० ॥ पच गुन निज लव तीन घटि तामें
 दस को भाग ॥ राश विलव दल चरन

न॥ दलके नवलव दोह दै उबरे को दै पाव। पुनि
 दसलव छह दोह के दै उबरे हिय चाव॥ ४४॥ न्यास
 लोहर को अंतर

१	२	३	४
५	६	७	८

 कोनी पाय

१	७	३	६
---	---	---	---

 या को दध की नीम ए ५४ हर

१	६	७	८
---	---	---	---

 और ह
 श्य दै या को दध ४५ ३६ यामें ८४ को भाग लिए
 पाई राश ५४० लवा पचाह करि हर दृष्टगुनि जा
 को भाग लीये ह पायो अंक ५४०॥ अथ विभेद
 जात॥ राश त्रिलव पुनि पंचलव दै कै कियो विवे
 क॥ इन दै को अंतर तिगुन पुनि दै पचो सु एक
 ४५॥ न्यास

१	२
३	४

 लन दै को अंतर २२ तिगुन कियो
 अपवर्त्तन ए

१

 ता को रूप भयो ऐसे

७	९	७
३	५	५

 सम छेद करि एकमे ते घटाये पाये दृश्य दृष्ट
 सुनाइ लाभ २२ को भाग लीनी पायो अंक राश
 अथ संक्रमण॥ जो पूछै कोई अंक दै अंतर
 जोग सुनाइ॥ अंतर घट बंद जोग मै करि दल
 राश बताइ॥ ४६॥ उदाहरन॥ जेना दुहू को
 साह है अंतर दस को मान॥ राश दोहू ते कोन सा
 होइ॥

य स्वाज घटाइ
 य सो गुनो भये ते
 से दार सों यही किया कीनी
 भयो छ रूप ऐसे फिर चौथे
 हर सों छ रूप ऐसे
 हर सों छ रूप ऐसे
 घटाइ ४५ य को द
 भयो ५५ यनाइ दै को भाग
 दृष्ट राश वही ५४०
 लीनी पाई राश वही ५४०
 अंक ५५ ताकीति हाई ५
 घट ४५ पंचमांश ४
 राश २ अंतर ६
 यह दृष्ट कमांतर ६
 भिद है दृश्य दृष्ट के घात
 से किया फन के भाग लीनी
 ते अज्ञान राश को बोध
 होइ॥

पूर्व राशि राश्यावर ६ रा
राशोग ५० जोग ५० अर्थ ५०
महसुत राशभट्ट पुनि दोऊ को
अंतर ४२ अर्थ २१ यह दूसरी
राश ॥

पुनक को साधौ करि करि
पुनि ताको बग दशांक में
महसुत शुभवर्तन करि नोरी
६ ताके मूल में फेर गुन तास
५ जोरि दीनिये जी प्रछक में
घाट कोनी बहो और पुन
कार्य घनाई दीनिये जी प्रछक
में जो सो बहो नो मपाक कोनी
सोई अचान राश हो

अमर करि घाट बाढ करि के को
महसुत बहो कि जो प्रछक में दल
पुन नोरी होइ तो पुन दल घटाई
को और नो मूल पुन घनायो
होइ तो पुन दल नोरी ॥

कह संक्रमी सुजान ॥ ४७ ॥ न्यास ॥ योगदुहं
को ६० अंतर १० इन दोऊन को जोरि के साधौ कियो पाई
एक राश ३५ पुनि दोऊन को अंतर करि साधौ कियो
पाई दूसरी राश २५ ॥ अथ वर्ग संक्रमण
राश्यांतर को भारालै वर्गांतर में सीत ॥ राशजोग
को लाभ लै पुनि करि पूरि रीति ॥ ४८ ॥ उदाहर-
आठतराई राश को वर्गांतर सौ चारि ॥ सोहै
राशविचारिके चातुर चारु उचारि ॥ ४८ ॥ न्यास
वर्गांतर ४०० में राश्यांतर ८ को भारालियो पायो
राशजोग ५० ताको पूरव विधि करि के पाई राश
है ॥ ४९ ॥ अथ मूल शेष जान ॥ जो पूछै
कोइ राश को काहू गुनक गुनाइ ॥ राशवर्ग में
जोरि वा घटि करि पोष घनाइ ॥ ५० ॥ गुन दल
कृत में जोरि दश पुनि ताको करि मूल ॥ पुनि
गुनि दल करि घाट बहो क्रम करि ताहि न
मूल ॥ ५१ ॥ उदाहरण राशमूल दल सात
गुन दै के उबरे दोइ ॥ कहा राश वह को न सी

सिंगरे पंडित लोद ॥ ५२ ॥ न्यास ॥ मूल गुन ३
 दश २ गुणार्ध ३ वर्ग १६ दृश्य जो सौ भए ३ मूल
 ताको ३ गुणार्ध ३ योग ३ अपवर्त्त भए ४ वर्ग १६
 से ३ भयो राश अंक १६ ॥ अथ जोरि वे को उदा
 हरन ॥ मूल नौ गुनौ मिलि भये चारह सै चालीस
 वर्ग अंक सो कौन सो जानत सकल युधीस ॥ ५३ ॥
 न्यास मूल गुणार्ध ३ वर्ग १६ दृश्य जोरि भए
 ५० ५१ मूल ३ गुणार्ध ३ ऊन किये भए ६२ अ
 पवर्त्त ३ वर्ग ६६ यह राश पाई ॥ अथ मूल
 और भाग को सूत्र ॥ जो घट बढ़ निज लव
 जने होइ सुरास सभाग ॥ घट जुत करि लव
 एक सै गुन दृश्य जै लै भाग ॥ ५४ ॥ दोऊ फल ए
 भाग के दफ गन दक दृश्य मानि ॥ इन दोऊ लै
 करि किया फिरि पूर्व विधि ठानि ॥ ५५ ॥
 उदाहरन ॥ मूल दस गुनौ दृश्य को और आ
 ठवौ भाग ॥ दान कियो तब छह बचे कौन सु
 राश सभाग ॥ ५६ ॥ न्यास ॥ मूल गुन १० भाग ६

मूल गुन को अर्थ यह है कि जो
 राश को मूल गुन द्वा चार बढ़
 होइ और राश को मूल गुन द्वा
 बढ़ होइ तौ ताकी किया ऐसे
 करिय ॥
 जैसे या उदाहरन में पहले मूल
 ल गुन द्वा ३ और दृश्य द्वा ३
 लव को एक से चढाये कौन
 न दृश्य से भाग लिये नौ भयो
 मूल गुन द्वा ३ और दृश्य द्वा ३
 ही गुन अरु दृश्य करि करि
 के सोई पूर्व किया गुन द्वा
 वर्ग में दृश्य जोरि के ताकी
 मूल निकास के कर गुन द्वा
 जोरि वे ताकी वर्ग पाई राश
 १५४ ॥

॥ वैराग्य कहिये जयै
भीन राग प्रगट होहि और
चौरी राग अज्ञान दूष्ट जैसे
जोएते को पत्तो निवनाते
रागिना पाको फल इच्छा युक्त
समसाधन फल इच्छा को

॥ १६ ॥
अनार्य भाग लीये नै राग
कोलो फल हूँ नै भए
मोत्यो भयो समष्टि
याको पुनः समष्टि करि
अनार्य भाग लीये नै राग
कोलो फल हूँ नै भए
मोत्यो भयो समष्टि
याको पुनः समष्टि करि

फल अज्ञान है। नाही के ना
निवे की इच्छा और फल के
सातवें प्रमान को भाग निवे
नै प्राप्ति चौरी अज्ञान राग
॥ सुहर को सत्तांश गुनी ॥

॥ सुहर के सत्तांश गुनी
की चारि तोला के सारि प्राप्ति
एतौ नव सुहर की कती पैये ॥
चौरी चौरासी तोला के सारि नव
सुहर की पैये तौ चार तोला
के कती पैये प्राप्ति फल सुहर
को सत्तांश गुनी चारि
तोला के सारि को मोल ॥

कौ एक में चदायो अपेष्ट्या करि कै मूल गुन २०
मे भाग लियो पाए ५० यह मूल गुन भयो फेर ३
कौ दृश्य ६ में भाग लियो पाए ५० यह दृश्य नाम
भयो अब मूल गुन ५० और दृश्य ५० करि घूरव
विया किये तै पाए राश्यांक १४४ ॥ अथ वैरा-
ग्य ॥ कहि प्रमान इच्छा वहरि आदि अंत सम
जात ॥ फल संज्ञा है मध्य की इच्छा फल करि घा-
त ॥ ५७ ॥ तामें भाग प्रमान कौलै इच्छा फल
लेह ॥ फल प्रमान वध इच्छा वर व्यस्त विराज
करह ॥ ५८ ॥ उदाहरण ॥ सुहर सौ तल्व तिगु
न की केसरि तोला चारौ पाये तौ नव सुहर की
कती मिलै वजार ॥ ५९ ॥ न्यास प्रमाण फल इच्छा
इच्छा और फल गुने तै भए ३६ प्रमान को भाग
लियो तोला ५५ पायो केसर को मान ॥ या उदाह-
रन में प्रमान इच्छा स्थान में सुहर समान जाति
है ॥ और जौ तोल समान जाते होइ तौ ऐसे लिखि-

प्रमान ३६ तोला	फल ३६ सुहर	इच्छा ३६ तोला	ए पाई सुहर ३ चार तोला के सारि
----------------------	------------------	---------------------	-------------------------------

* इसी उलटी क्रिया
तें जल की लान होइ कहि
है हि ज्यों ज्यों बहती
नाइ त्यों त्यों मोल बढ़ती
होइ ॥

* यह उदाहरन की क्रिया
व्यस्त त्रैराशक करि सिद्ध
होइ कहि क्रिया की दू-
को प्रमान रूप है बहुत मध्य

कौ मोल ॥ अथ व्यस्त त्रैराशक ॥ मोल नीय
कौ वैस तें व्यस्त त्रैराशक होइ ॥ बहुत मोल लख
फल जहां वह फल लघु व्यय से ॥ ६॥ उदाह-
रन ॥ स्यानां सोरह दरस की वतिस मुहर यिया-
इ ॥ बीस वरस की जु वतितौ केने मोल लहाइ

प्रमान	फल	इच्छा
१६	३३	३०

॥ ६॥ न्यास प्रमान और फल
गुन्यो भए ५११ इच्छा १० कौ भाग लियो पाईल
२२५ ॥ दूसरी उदाहरन ॥ मोती ॥ मोती
सात परोइ होइ जु ऐसी सौलरी ॥ तिन मोतिन
की होइ ॥ पांच पांच की लर किती है ॥ न्यास

प्रमान	फल	इच्छा
७	१००	५

व्यस्त की या करि पाईलरी १६
अथ पंच राशक ॥ पंच सप्त नव राशनें दस
फल हर वदलाइ ॥ पृथक पृथक दुइ पच्छ
नि अथ ऊरध करि चाइ ॥ ६॥ बहुत दस दस
पच्छ में अल्प राश वध भाग ॥ लै करि इच्छा
फल लहौ बहि वंत वड भाग ॥ ६॥ उदाहरन
॥ एक मास सौ मूल को पाईल ॥ ६॥

विचारतें जान होइ ॥
पंच राशक कहिये और
चराश प्रगाट होइ और
छठी राश अज्ञान होइ और
या में फल प्रमान ही के तै
धसी जात है ना फल को
क्रिया समै इच्छा के तै और
ह इच्छा के तै को हर प्रमान
के तै ल्याइ कै होइ फल
प्रमान और इच्छा के जुदे
जुदे गुनाइ के अल्प राश
फल को भाग बहुत राश
फल नै लै के जो ला भई
इ सोइ अज्ञान राश
न नव फल दस राश
की वही क्रिया है ॥
प्रमान के तै को
क लन जहा है ॥
इच्छा के तै को
हा लहौ ॥

सोह को रविमासमें व्यक्त कहा कह सोह ६५

अथ अज्ञानव्याजस्य उदाहरणम् ॥

न्यास ॥ १ १९ ॥ ५ श्रीरहारे ० अदल

१	११
१००	१६
५	०

पञ्च प्रश्नोत्तरम्

वटलकनि	५	०	अयो रूप से	१	१३
--------	---	---	------------	---	----

१	१०
१००	१६
०	५

	१००	१६
दीर्घपक्ष जूटे जड़े पनाइ मए	९	५

एतत् १०० अंशे मूल्य राशालाभाराजीपपाय

४८ श्री अन्नार काल की यात्रा ॥

4	900
---	-----

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

१०. **सिंह साम्राज्य मनु में गाथा**

स्वर्गारोहणार्थं मूलं न यच्छि
विषयैः ॥ २ ॥

क्रिया तथा श्रम मूल धन है

दुसरे उदाहरण हिंदू मानस्य २६

मासं सका जाफलपचमाश्चुतसत्त्व

॥पंचमांश जुत तीन सासकल साडे वासठक॥

फलसांख्य ॥१॥ न्यास

फूल श्रीरहस्यदत्ताद दोष १२५

पञ्च जुदे जुदे गुनाद् भिन्न

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ऐसे ५२००० ५० ५०० ताको रूप भयो ऐसै १५६ ५००

अल्प राश को आग लियो पाए ३० अथ सप्त

राश सब राश को उदाहरन ॥ कवित्त ॥

आठ हाथ वीरघता तीन विस्तार आको ऐसे पद

आठ जय सौके मूल लहिये ॥ साठे तीन हाथ ल

वो चौरा हाथ आध ऐसो एक पद कहो केते मूल

को विस्तारिये ॥ नव राश ॥ और थंभ सी सप्त

त्येक विद्या हाथ मूल सारह अंगुरि चौरि पिंड

राख कहिये ॥ सौ को जो बिकाव और चौह स

थंभ आके तीनौ मान चारि चारि खादि कहा

चाहिये ॥ २ ॥ न्यास

एक वदलाव अल्प

लीयो पायो रूपये ०

पादे २१ ॥ न्यास नव राश

एक वदलाव पायो रूपये २६ ॥

अथ एकादश राश उदाहर

न ॥ दोहरा ॥ तीस थंभ इक

चैन	२	३
अन	१	२
उद	८	९
माव	१००	०

फल और

राश को भता

आने २४

तल	२५	२०
हाथ	२६	२२
अंगुल	२७	२३
पिंड	२८	२४
अंगुल	२९	२५
थंभ	३०	२६
माव	३००	०

फल और वदलाव ५०० २६ ५०० २६ ५०० २६ ५०० २६

आग लीयो मयो रूप ५०० २६ ५०० २६ ५०० २६ ५०० २६

नव राश के फल और ५०० २६ ५०० २६ ५०० २६ ५०० २६

लाभ २६ २६ २६ २६ २६ २६ २६ २६

कोस्त की दई मन्तरी अ॥ कहा देहि छह कोस
 कौ दूर्जे चौदह काह ॥ ६ ॥ न्यास

नून	१४	१०
अरज	१६	११
उचाई	१९	८
धूम	३०	१४
कोस	१	६
मन्तरी	८	०

पूरव क्रोया विधि ते पाई मन्तरी
 छ कोस की चौदह धूम की ८
 अथ भांड प्रणि भांड विधि
 रीति भांड प्रति भांड में मध्य अंक बदलाय । पु-
 नि पूरव विधिकर क्रिया ता फल कौ फल पाव
 ६७ ॥ उदाहरन ॥ चौपई ॥ सोरह के तु तीन
 सो आम ॥ इक के तीस अनार सुनाम ॥ दस
 आंवन के किने अनार ॥ नीकै करि कइ बुद्धि
 विचार ॥ २ ॥ न्यास

१६	१
३०	३०
१०	०

मध्य अंक बद-
 लि भयो रूपे से

१६	१
३०	३०
१०	०

दोऊ पक्ष गुनि
 अल्प राश कौ भाग लीये पावौ फल १६
 अनार ॥ अथ मिश्र विवहार प्रथम सूत्र
 मान काल धन मान गुनि मिश्र काल फल घात
 पृथक पृथक ये लिखि प्रथम जोग करौ पुनि भा-
 त ॥ ६८ ॥ पृथक दि गुनि धन मिश्र मै लेहु जोग

* एकदश राश के फल हू
 बदलि दोऊ पक्ष गुने नै भए
 ६४५२३० ८०६२०
 भाग लीये ६४५२३०
 ८०६२० फल

* दोऊ पक्ष गुने नै भए
 ६४०० ३० भाग ६४००
 पावौ फल अनार
 १६

कौभाग ॥ प्रथक मूल पुनि व्याज कौफल पावैवद
 भाग ॥ ६८ ॥ उदाहरन ॥ एक मास रगत मूल में व्या
 ज पांचके मान ॥ सहस मिलै जौ बरस में
 मूल व्याज कहू जान ॥ ७० ॥ न्यास ॥ मानकाल
 धन मान १०० गुने भये १०० फल ५ मिश्रकाल १२
 दोऊ गुने भए ६० जेदधरे १०० ६० जोग कियो
 भए २६० सौ कौ दू जार लौं गुनि एक सौ साठ कौ
 भाग लीयो पायो मूल ६२५ फेर साठ कौ किया
 कौनि पायो व्याज ३७५ ॥ और सूनु ॥ मानकाल
 अरु मान धन पहिलै गुनि बहु भाग ॥ मिश्रकाल
 फल घात कौ पुनि तामें लै भाग ॥ ७१ ॥ प्रथक
 प्रथक तिहि खंड लिखि पुनि ता कौ करि जोग
 खंड मिश्र धन बधहि पुनि हरै जोग धन लोग
 ॥ ७२ ॥ उदाहरन ॥ रिन लीनौ जन तीन तैं-
 तीन मान कौ व्याज ॥ प्रथम पचेत्तर पुनि विनु
 र वद्धर चलोत्तर साज ॥ ७३ ॥ सात मास दूक
 कणए दूजे के दस मास ॥ त्रितिय रिनी कौ

१०० काल प्रमान धन गुनि १००
 फल मिश्रकाल गुनि ६०
 को जोग ६० मिश्र धन १००
 ली १०० करि गुनि १००
 एक सौ साठ ६० कौ भाग ली
 जो पायो मूल धन ६२५
 और मिश्र धन १००० ६० सो
 पुन्यी ६०० एक सौ साठ ६०
 को भाग लीनो पायो व्याज
 मान ३७५

अरसठ बहुरि पंचासी तिहि ठौर ॥ १७ ॥ भए
तीन सौ मिश्रधन सब कल मूल सखेत ॥ तित
तीनों के भाग फल जुदे जुदे करि चित ॥ १८ ॥
न्यास ॥ मूल धन तीनों के

५९	६८	८५
----	----	----

मिश्र धन ३०० करि जुदे जुदे गुनि गए ऐसे

१५३००	२०४००	२५५००
-------	-------	-------

 मूल धन जोग
२०४ कौ भाग लीनो पाए

१५	१००	१२५
----	-----	-----

 यासै
मूल धन घटाए तैं लाभ नाग पायो

२४	१२	४०
----	----	----

और सह ॥ अदल बदल करि हार लव जोरि
एक में भाग ॥ लि करि कुरत यताइ दे काल मान
छह भाग ॥ १९ ॥ उदाहरन ॥ चारि फुहारे
हीन में चास्यौ चारि प्रकार ॥ एक भै दिन एक
में दूजौ दल में वारि ॥ २० ॥ पुनि तीजौ विनि
यांश में चौथौ छह वै भाग ॥ चास्यौ दूफटे जौ
छुटै काल मान कहिला ॥ २१ ॥ न्यास

१	१	१	१
१	२	३	६

हार और लव अदल बदल
गुनि गए ऐसे

२	३	३	६
१	१	१	१

अथ हार वृत्ति वी कदिए
अथान सौ नचि करिये हार
हारन को कुरा करिये नम
छह कौर जोरिये जोर याजो
एक में भाग लीनिए नव
काल मान को लाभ होइ स

यात्यान विपै जो अमुनहो
नीरुन करि जो रज्जु नी
समये वनो दुहै ॥
क मिय धन ते रह पाइ सवाती
न जानात सो ॥ १६ ॥ चाँवर
अरु चाँवर के आव भाग ॥ १७ ॥
मुनो भए ॥ १८ ॥ चाँवर भाग जो
॥ १९ ॥ को भाग लीनी भए ॥ २० ॥
॥ २१ ॥ चाँवर को येल ॥ २२ ॥
हंग के आव भाग ॥ २३ ॥ को भाग लीनी
॥ २४ ॥ मुनो भए ॥ २५ ॥
॥ २६ ॥ को भाग लीनी
॥ २७ ॥ एक सो चाँवर
॥ २८ ॥ चाँवर अपवर्ते
॥ २९ ॥ करि नाल ह जा
॥ ३० ॥ जो चाँवर
॥ ३१ ॥ फल ॥ ३२ ॥ पायो
॥ ३३ ॥ चाँवर
॥ ३४ ॥ अरु जो हंग
॥ ३५ ॥ पायो ॥ ३६ ॥ अरु
॥ ३७ ॥ करि अपवर्ते ॥ ३८ ॥
॥ ३९ ॥ चाँवर
॥ ४० ॥ हंग
॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥

जोरिं भए ॥ १ ॥ एक मैं भाग लीने पायो काल मान
॥ २ ॥ और सूत्र ॥ मोल भाग कौ घात करि भाव
भाग लै भाइ ॥ पृथक पृथक लिखिता सु कौं सुनि
करि जोग धराइ ॥ ३ ॥ पृथक भाग धन मिय
हुनि भाग जोग कौ भाग ॥ लि करि पैये मोल फल
तो ल विराश कलाग ॥ ४ ॥ उदाहरन ॥
चाँवर साठे तीन मन एक रुपैया मोल ॥ भाप हंग
कौ आठ मन पैये पूरे मोल ॥ ५ ॥ पाथिक एक
मांगन लग्यो ते रह पाइ ल्याइ ॥ चाँवर के है
भाग दै मृग एक लव भाइ ॥ ६ ॥ मोल
तो लहू ता सु कौ नुवौ नुवौ समुझाइ ॥ वेगि
देइ यह रबीचरी लोग संग को जाहिं ॥
॥ ७ ॥ न्यास ॥
भाग कौ घात कियौ
भाव कौ भाग
भए ॥ ८ ॥ फल ॥ ९ ॥ फल ॥ १० ॥
॥ ११ ॥ फल ॥ १२ ॥ फल ॥ १३ ॥
॥ १४ ॥ फल ॥ १५ ॥ फल ॥ १६ ॥
॥ १७ ॥ फल ॥ १८ ॥ फल ॥ १९ ॥
॥ २० ॥ फल ॥ २१ ॥ फल ॥ २२ ॥
॥ २३ ॥ फल ॥ २४ ॥ फल ॥ २५ ॥
॥ २६ ॥ फल ॥ २७ ॥ फल ॥ २८ ॥
॥ २९ ॥ फल ॥ ३० ॥ फल ॥ ३१ ॥
॥ ३२ ॥ फल ॥ ३३ ॥ फल ॥ ३४ ॥
॥ ३५ ॥ फल ॥ ३६ ॥ फल ॥ ३७ ॥
॥ ३८ ॥ फल ॥ ३९ ॥ फल ॥ ४० ॥
॥ ४१ ॥ फल ॥ ४२ ॥ फल ॥ ४३ ॥
॥ ४४ ॥ फल ॥ ४५ ॥ फल ॥ ४६ ॥
॥ ४७ ॥ फल ॥ ४८ ॥ फल ॥ ४९ ॥
॥ ५० ॥ फल ॥ ५१ ॥ फल ॥ ५२ ॥
॥ ५३ ॥ फल ॥ ५४ ॥ फल ॥ ५५ ॥
॥ ५६ ॥ फल ॥ ५७ ॥ फल ॥ ५८ ॥
॥ ५९ ॥ फल ॥ ६० ॥ फल ॥ ६१ ॥
॥ ६२ ॥ फल ॥ ६३ ॥ फल ॥ ६४ ॥
॥ ६५ ॥ फल ॥ ६६ ॥ फल ॥ ६७ ॥
॥ ६८ ॥ फल ॥ ६९ ॥ फल ॥ ७० ॥
॥ ७१ ॥ फल ॥ ७२ ॥ फल ॥ ७३ ॥
॥ ७४ ॥ फल ॥ ७५ ॥ फल ॥ ७६ ॥
॥ ७७ ॥ फल ॥ ७८ ॥ फल ॥ ७९ ॥
॥ ८० ॥ फल ॥ ८१ ॥ फल ॥ ८२ ॥
॥ ८३ ॥ फल ॥ ८४ ॥ फल ॥ ८५ ॥
॥ ८६ ॥ फल ॥ ८७ ॥ फल ॥ ८८ ॥
॥ ८९ ॥ फल ॥ ९० ॥ फल ॥ ९१ ॥
॥ ९२ ॥ फल ॥ ९३ ॥ फल ॥ ९४ ॥
॥ ९५ ॥ फल ॥ ९६ ॥ फल ॥ ९७ ॥
॥ ९८ ॥ फल ॥ ९९ ॥ फल ॥ १०० ॥

गुनाइ भाग जोग को भाग लीनी पायो पृथक मोल

मान

१	७
६	१६२

 पुनि वैराग करि पायो नेल भा

न

७	७
१२	३४

 अथ और उदाहरन ॥ तोला ए

क

७	७
१२	३४

 पूर की वतिस सुदा मोल ॥ चंदन

आना दोइ को पैये तितनुहि तोल ॥ ८७ ॥ आधे

तोला अगर हू है आना अयलारा ॥ इक कपूर

अरु अगर वसु. चंदन सोरह भाग ॥ ८८ ॥ ऐसी

धूप मिलावदे. सोरह धन ले मोल ॥ जुदौ जुदौ

पुनि तासु को कहि है मोल रु तोल ॥ ८९ ॥ न्यास

कपूर	चंदन	अगर
३३	६	६

 मोल भाग वध

११	११	११
----	----	----

बोल	३३	६	६
-----	----	---	---

 भाव भाग फल

११	११	११
----	----	----

भाग	१	१	१
-----	---	---	---

 पायो

३३	११	११
----	----	----

 याकौ

भाग	१	१६	६
-----	---	----	---

 जोग भयो ३६ मिश्र धन

१६ पूरव किया करि पायो पृथक मोल फल

कपूर	चंदन	अगर
१६	८	८
६	८	८

 तोल मान

कपूर	चंदन	अगर
४	६४	३२
८	८	८

 अथ और

स्तव ॥ दानरु नर गुनि परस्पर रतन सांरु

३३ कपूर को भाव भाग ३३ या
मिश्र धन २६ गुनि १२२ को भाग
में भाग जोग ३६ को भाग
लीनी पायो कपूर को मोल
३३ ऐसे ही चंदन भाव
भाग ३६ करि गुन्यो २२
में ३६ को भाग लीनी पायो
चंदन को मोल ३३ याही
किया करि है अगर हू अये
३३ मोल तीनो रूप भयो
कपूर चंदन अगर
३३ ३३ ३३
ऐसे कपूर चंदन अगर
३३ ३३ ३३
वैराग करि है ऐसे तोल
जानिए ॥ कपूर ३३
अरु ३३ वतिस
३३ करि अपवर्त पायो कपूर
३३ को तोल ३३ ऐसे ही
चंदन प्रमान फल ३३
पायो ३३ अरु अगर
फल ३३
प्रमान फल ३३
अपवर्त ३३

मानिक ८ दार २५ हैं भए
 १६३ धामें तीन मानिक
 को मोल ३२ दान कीनी जे
 रहे १२० धामें १६ एक नीने को
 मोल तथा १२८ मोती को
 मोल तथा ६६ एक मानि को
 मोल जोरि दीनी भयो धन
 २५३ ऐसीही नीलि १० दार १६
 भए १६०/४८ के तीन घाट शे
 ४१२ हैं ३५/११/६६ ॥ जोरि
 दिए भए सोई ३१३ मोती १००
 के भए १०० तीव १ घाट ६३/२६
 १६/२६ जोरते भए सोई ३१३
 ऐसीही पाहिह जानिए

घटाउ ॥ शेष भागलै दृष्टमें पृथक् मोल समझाव
 ॥ ६० ॥ उदाहरन ॥ मानिक वसुं दसैं नील
 मनि मोती सौं मनि पांचे ॥ यह धन लीनौ चारि
 जज प्रीत परस्पर सांच ॥ ६१ ॥ दूक दूक दीनौ
 परस्पर निज निज धन तैं बांदि ॥ तब सब मिलि
 सग धन भए पृथक् मोल कहु छांदि ॥ ६२ ॥
 न्यास ॥ मानिक ८ नीलि १० मोती १०० माणि ५
 नर ४ दान १ अभिन्न दृष्ट प्रकल्प्यो ६६ दान
 नर गुन्यो भए ४ रतन में घटाये भये ऐसैं -

मानिक	नीलि	मोती	मनि
४	६	६६	१

 ६६ में भाग लीनौ पायो
 प्रत्येक मोल

मानिक	नीलि	मोती	मनि
४२	२	२	२
३४	१६	१	६६

 चारि की तुल्य धन भयो २३३
 अथ श्रेढी विवहार सूत्र ॥ एक आदि क्रम
 अंक की चहै जोग जो कोइ ॥ एक जोरि कै
 राशि में राश अरध गुनि सोइ ॥ ६३ ॥ उदाहरन
 ॥ एक आदि नव अंत की कहा संकलन हो
 इ ॥ एक जोरि नव में वृद्धि नव दल सौं गुनि

सोद् ॥ ८४ ॥ न्यास ॥ ८५ ॥ १ जो सो य ए १ व्याकौ
 १ सौं गुन्यो पायो नव के संकलन को फल ४५
 और स्तूत ॥ एक आदि संकलन को. जोग च
 हे जो कोद् ॥ है जत पद संकलन गुनि. तीन
 भाग लै सोद् ॥ ८५ ॥ ऐसैं जोलौ चाहिये. जोग
 जोग को भाग ॥ इक एक छेपक में बढौ. इक
 आजक सैं लोग ॥ ८६ ॥ न्यास ॥

एक आदि अंक	१	२	३	४	५	६	७	८	एक जोरि के पदार्थ से गुनरी जो दूसरी पंगति भई
प्रथम संकलन	१	३	६	१०	१५	२१	२८	३६	है जत पद संकलन गुनि १ को भाग ती सरी पंगति भई
संकलन जोग	१	४	१०	२०	३५	५६	८४	१२०	तीन जत पद संकल न गुनि ४ को भाग तीथी पंगति भई
संकलन जोग को जोग	१	५	१५	३५	७०	१२५	२०५	३२५	चार जत पद संकल न गुनि ५ को भाग पंचवीं पंगति भई
यादू को जोग	१	६	२१	५६	१२६	२२६	३७६	५७६	

संकलन कहिये एक आदि
 अंक अंक की जो बीक सोद्
 संकलन कहिये ॥
 ८ के अंक में २ जोरि के
 पदार्थ में गुनेत पायो नव को
 संकलन ४५ या संकलन को
 संकलन जालौ चाहिये तो
 संकलन जालौ ११ या को
 ४८ में है जोरि ते अ ११ या को
 ८ के संकलन ४८ सौं गुन्यो
 ४८ ४ तीन को भाग लीनो
 ४८ ४ यादू को जो संक
 न चाहे तो ८ में तीन १
 जोरि कै १६ संकलन सों
 गुनि चारि को भाग लीनो
 न पायो तीसरी संकलन
 ४८ ऐसी जहां तई सं
 कलन चाहिये एक एक
 छेपक में सरु एक एक
 आजक सैं बढाय नैं का
 र सिद्ध होद ॥

इहां पद कहिये अंति
के शुक को नाव अंक को
वर्ग संकलन जान्यो चाहिये
इहां पद संख्या दिन सख्या
को है ॥
बढ़ती सथा वय कहिए
जितनो जितनो पन दिन
दिन बढ़ती दान की निए
तासों ॥
बुरव कहिये जे तो धन पहि-
ले दिन दान की निए तासों ॥
चारि बुदा पहिले दिन है
कै फिर दूसरे दिन पांच चौ
द बुदा दुहे - जो बुदा देनी
तीसरे दिन पांच ५ और
बढ़ती करि १४ दीये याही
कन सो १५ दिन लो दान की
जेने जे तो धन प्रहं दिन लो
और जो पंद्रह दिन नै नि-
नको आव नै दिन दीनिए
तासों मध्य धन कहिये
सब दिन की ठीक
सर्व धन ॥ ॥

और सूत्र ॥ वर्ग संकलन जो च है पद दूने इके
जोरि ॥ गुनि ताकों संकलन करि हर करि तीन
बहोरि ॥ ६७ ॥ न्यास ॥ पद ८ दूनी १८ एक १
जो स्यौ १८ नव कौ संकलन ४५ सौं गुन्यौ भये
८५५ तीन कौ भाग लीनौ पाए २८५ याही
क्रिया सौं एक आदि नद ताई के वर्ग संकलन
ये सैं

१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	५	१४	३०	५५	८१	११०	१४५	१८५

और सूत्र ॥ दोहा ॥ इक घट पद अरु व-
दंति वध सुख जुत लहि धन अंत ॥ पुनि
वामें सुख जोरि दल करि मधि धन लहि संत
२८ ॥ पद संख्या धन नंध्य गुनि सब धन जोर
सुनाय ॥ उदाहरन ॥ चारि दान करि प्र-
चम दिन बढ़ती पांच गिनाव ॥ ६६ ॥ पंद्रह
दिन लीं यों दियो अंदि मध्य धन भाषि ॥ कहा
भयो पुनि सर्व धन भाषि बुहिकी सारि ॥ १००
न्यास ॥ आदि धन ५ बढ़ती ५ पद १५
एक दिन पद १४ बढ़ती ५ सौं गुन्यौ ७० सुख ४

जोस्वौ ७४ यह अंत दिन को धन भयो फिर
यामें मुख ४ जोस्वौ ७८ दल ताको ३८ यह
मध्य धन भयो फेर याको पद १५ सौं गुन्यौ
पायौ सर्व धन ५८५ और जो पद के सम दिन
होइ तो मध्य धन को संभव नाही तहां मध्य
धन के अगिले पिछले धन के जोगार्थ को
लाभ होइ ताही सौं कार्य सिद्ध होइ ॥ अथ
अज्ञात मुख राज जानिवे को सूत्र ॥
मुख अज्ञात के ज्ञान को सब धन पद करि भा-
गि ॥ एक घट पद वय दल हि गुनि तामें छदि
वह भाग ॥ १०१ ॥ न्यास ॥ सुख ० वर ५ पद
१५ सब धन ५८५ यामें पद को भाग लीनौ ॥
पाए ३८ एक हीन पद १४ वयार्थ ५ करि गु-
न्यौ पाये ३५ याको मध्य धन ३८ सौं घटाये
पायौ मुख धन ४ ॥ अथ अज्ञात वय को
सूत्र ॥ सब धन में पद भाग फल तामें करि
मुख हीन ॥ एक रहित पद अरध को तामें

* मध्य दिन आठवें दिन ॥
 ५ जैसे याही उदाहरन जो
 दिन निमित्तये तो एक हीन प
 ६ १२ सो वय ५ गुनित ६५ मे
 मुख ४ जुत ६५ संति धन
 भयो फिर या मे मुख जुत
 ७३ १२ यह मध्य धन
 भयो यह सातवें दिन आ
 ७ वें दिन के धन को अर्थ है
 ७ दिन ८ दिन
 १२ यो

४ और नौ दिन प्रमान
परु बद्धी और सर्व धन
जानिए और पहिले दि-
न की दान अज्ञात होइ तो
ताकी विधि हे न्यास है
जानि लीनि ॥

वयस्य अरु अरु के
अंतर के वरग में तब ध
अंतर के वरग में तब ध
वयस्य अरु अरु के
अंतर के वरग में तब ध

भाग प्रवीन ॥ १०२ ॥ न्यास ॥ सव धन में
पद के भाग को फल ३८ तामें मुख हीन ॥

में एकरहित प्रदार्ध ७ को भाग फल पायो वय
५ ॥ अथ अज्ञात पद को सूत्र ॥ वय दल

मुख अंतर वरग सव धन वय वध दून ॥
जोरि तासु को मूल लेतामैं मुख करिऊन ॥

॥ १०३ ॥ तामें वय दल जोरि पुनि वय को
लीजै भाग ॥ लांभ होइ पद ज्ञान को जानै

सो बड़ भाग ॥ १०४ ॥ न्यास ॥ वय दल ५
मुख ४ या को अंतर ३ वर्ग ४ सव धन

वय सौं गुनि कै दूनौ की यौ भए ५०५० यामें
वर्ग ४ जो स्यो भये ३३४०५ या को मूल

१५३ यामें मुख ऊन की नी भए १५५ वय
दल ५ जोरि भये १५० वय ५ को भाग ली

नौ पाई पद संख्या १५ ॥ अथ काहू
गुनक में नित्य गुनाइ गुनाइ करि दै

वे को सूत्र ॥ विषम एक तत्रि गुन धरो सम

भाग प्रवीन ॥ १०२ ॥ न्यास ॥ सव धन में
पद के भाग को फल ३८ तामें मुख हीन ॥
में एकरहित प्रदार्ध ७ को भाग फल पायो वय
५ ॥ अथ अज्ञात पद को सूत्र ॥ वय दल
मुख अंतर वरग सव धन वय वध दून ॥
जोरि तासु को मूल लेतामैं मुख करिऊन ॥
॥ १०३ ॥ तामें वय दल जोरि पुनि वय को
लीजै भाग ॥ लांभ होइ पद ज्ञान को जानै
सो बड़ भाग ॥ १०४ ॥ न्यास ॥ वय दल ५
मुख ४ या को अंतर ३ वर्ग ४ सव धन
वय सौं गुनि कै दूनौ की यौ भए ५०५० यामें
वर्ग ४ जो स्यो भये ३३४०५ या को मूल
१५३ यामें मुख ऊन की नी भए १५५ वय
दल ५ जोरि भये १५० वय ५ को भाग ली
नौ पाई पद संख्या १५ ॥ अथ काहू
गुनक में नित्य गुनाइ गुनाइ करि दै
वे को सूत्र ॥ विषम एक तत्रि गुन धरो सम

विषम एक तत्रि गुन धरो सम
विषम एक तत्रि गुन धरो सम
विषम एक तत्रि गुन धरो सम
विषम एक तत्रि गुन धरो सम
विषम एक तत्रि गुन धरो सम

दल करि कृतधारि ॥ ऐसैं पद मिति शुद्ध लौं गुन
 दल चिन्ह विचारि ॥ १०४ ॥ उलटि एक सौं करि
 किया वरग गुनन कोरीन ॥ फल दूक घट करि
 तासु में दूक घट गुन हर सीत ॥ १०५ ॥ ता फल
 कौं गुनि आदि सौं सय की ठीक बनाव ॥ चाही
 विधि यह कठिन अति सुगम करै करि चाव ॥
 ॥ १०६ ॥ उदाहरन ॥ द्वै दीने पहिले दिना दि
 न दिन निगुनौ दीन ॥ सात दिना कौ धन
 कहौ केतौ भयो प्रवीन ॥ १०७ ॥ न्यास ॥
 आदि उत्तर तिगुन पद ७ यह पद विष सां
 कहै यातैं एक घाटि करि कै गुन चिन्ह धस्यौ
 ऐसैं गु फेर शेष ६ सम अंक कौ आधौ करि
 वर्ग चिन्ह धस्यौ ऐसैं य फेर शेष ३ विषस
 अंक तैं एक उल करि गुन चिन्ह गु गुमि २ कौ
 आधौ करि ब फेर १ कौ दूरि करि गुन चि
 न्ह धस्यौ गु भई चिन्ह बल्ली ५
 उलटि कें नीचि तैं क्रीया आरंभ ४

गु
 व
 गु
 व
 गु

स्वके नीचे गुनक चिन्ह है
 तहां तैं क्रीया आरंभ कीतिर
 तहां पहिलें एक कौ दूके
 तहां पहिलें गुनाए तैं दोद
 गुनक में गुनाए तैं वर्ग
 दोब र फेर दूसरे वर्ग
 चिन्ह है तहां दूको वर्ग
 भयो फिर तीसरो वर्ग
 चिन्ह है तहां चारि को
 वर्ग १६ भयो फिर गुनक
 चिन्ह में १६ दू गुनक में
 गुनै तैं भयो फिर वर्ग
 चिन्ह में पचीस को वर्ग
 कीनी भयो १०२५ याते ते
 एक घटायो १०२५ गुनक
 है में ते एक घटाई के या
 में भाग एक को लाते पाए
 सोई १०२५ फिर आदि है
 की गुनौ पायो सर्व धन
 को प्रमान २०४६॥

कीनी नीचें पहिलै गुन चिन्ह है यातें एक को
 पहिलै ३ गुनक सौं गुन्यो भए ३ फेर ताको व
 र्ग कीनी भये ८ फेर तीन सौं गुन्यो भये २७
 फेर ताको वर्ग ७२८ फेर गुनक सैं गुन्यो भए
 २१८७ ऐसैं पदांक शुद्ध भयो यामें तें एक
 घटायो २१८६ गुनक दू सैं एक घाटि करि शे
 ष २ को भागलीनी पाए १०८३ याको आ
 दि धन २ सौं गुन्यो भयो सब धन २१८६
 ॥ अथ शंक पाश ॥ शंक यान मिति मान
 लहि एक आदि वय घात ॥ सोई संख्या भेद
 है. रूप देखि विख्यात ॥ १०८ ॥ शंक जोग
 सौं भेद गुनि. भाग यान मितिलेहु ॥ यथा
 यान थरि जोरि फल भेद जोग कहि देहु ॥
 ॥ १०९ ॥ उदाहरन ॥ दोई सौं के भेद
 कहु. भेद जोग पुनि भापि ॥ पुनि नव वसु
 त्रय भेद कहु. नासु जोग की सापि ॥ ११० ॥
 न्यास ॥ ३८ ॥ याके यान २ एक आदि

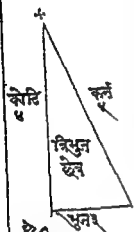
कीनी नीचें पहिलै गुन चिन्ह है यातें एक को
 पहिलें ३ गुनक सौं गुन्यो भए ३ फेर ताको व
 र्ग कीनी भये ८ फेर तीन सौ गुन्यो भये ३७
 फेर ताको वर्ग ७२६ फेर गुनक में गुन्यो भए
 ३१८७ ऐसैं पदांक शुद्ध भयौ यामैं ते एक
 घटायो ३१८६ गुनक दू में एक घाटि करि शे
 य ३ को भागलीनौ पाए १०८३ याकौं आ
 दि धन २ सौं गुन्यो भयो सर्व धन ३१८६
 ॥ अथ शंक पाश ॥ शंक यान मिति मान
 लहि एक आदि वय घात ॥ सोई संख्या भेद
 है. रूप देखि विख्यात ॥ १०८ ॥ शंक जोग
 सौं भेद गुनि. भाग यान मिति लेहु ॥ यथा
 यान धरि जोरि फल भेद जोग कहि देहु ॥
 ॥ १०९ ॥ उदाहरन ॥ दोइ साँठ के भेद
 कहु. भेद जोग पुनि भापि ॥ पुनि नव वसु
 त्रय भेद कहु. नासु जोग की सापि ॥ ११० ॥
 न्यास ॥ ३८ ॥ याके यान २ एक आदि

भेद ॥ प्रथम भेद में भाग लै भेद विशेष अखेद
 ॥ ११२ ॥ भेद जोग की रीत पै पूरब विधि ही जान
 न ॥ अंक पाश संक्षेप करि दूतनी ही लै
 मान ॥ ११३ ॥ उदाहरन ॥ दोइ दोइ इक
 एक मिति तिनके कितने भेद ॥ भेद जोग
 पुनि तासु कौ हम सौं कही अखेद ॥ ११४ ॥
 न्यास ॥

२	२	१	१
---	---	---	---

 पूरव रीत सौं अंक वारि
 के भये भेद २४ जिन ध्यान में सम अंक दूहां
 पहिलें दोइ ध्यान में सम अंक तिनके भेद २
 फिर और दोइ ध्यान में सम अंक तिनहूँ
 के भेद २ दोनो की जोग ४ पहिली क्रीया
 के भेद २४ में भाग लीनो पाए भेद ६ ऐ सैं
 २२११ ११२१ २११२ १२२१ ११२१ १२१२
 अरु भेद जोग ८८८८ ॥ दूसरी उदाहरन
 चारि आठ पुनि पांच अरु पांच पांच मिति
 जोड़ ॥ तिनके संख्या भेद अरु भेद जोग
 कहू सोड़ ॥ ११५ ॥ न्यास ॥ ४८५५ ५ दूहां

* अंक जोग ६ भेद ६
 सौं गुनो ४९ ३६ ध्यान मिति
 ४ की भाग लीनो ४ कौ
 चारि ध्यान में यथा ध्यान धु
 रि जोस्यो ४९ ३६ ४८ ४८



या त्रिभुज में तीनों भुज
बराबर को जयव नाही
है भुज बराबर है तर्क
कल्पना करिए

गिनत कौं होव न तमैं खोदि ॥ ११८ ॥ उदा-
हरन ॥

कोटि ४
भुज ३
कर्ण ५
कोटि चारि भुज तीनै कौ,
कहौ विनु खोदि ॥ कोटि
करन में भुज कहौ भुजा करन तैं कोटि ॥

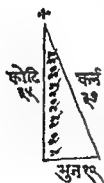
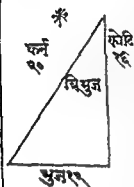
॥ ११९ ॥ न्यास ॥ भुज ३ कोटि ४ इनको वर्ग
जोग २५ ताकौ मूल ५ सोई करन मान भ-
यो ॥ फेर करन और कोटि के बरगन कौ
अंतर ८ याकौ मूल ३ सोई भुज मान भयो
॥ फेर भुज ३ और करन ५ के बरगन कौ
अंतर १६ ताकौ मूल ४ सोई कोटि
मान भयो ४ ॥ अन्य उदाहरन ॥

॥ सवा तीन है कोटि जहं भुज हू तितनी
जानि ॥ तहां करन को मान कहु पंडित
सुधर सुजान ॥ १२० ॥ न्यास ॥ इन कौ
वर्ग जोग $\begin{bmatrix} १३८ \\ १६ \end{bmatrix}$ दोइ कर अपवर्ते भए
 $\begin{bmatrix} १६८ \\ ८ \end{bmatrix}$ याके सुद्ध मूल कौ अभाव है तहां
करनी गत दिधितौ मूलानुमान पायौ-

४३७
४। ८००

अथ करनी गत विधि सूत्र

॥ लव अरु हर गुनि फिर गुनौ. यड़े दूट-
कृत नांह ॥ फेर जुदौ करि लिखि धरौ. तासु
मूल की छांह ॥ १२१ ॥ दूटरु हर के घात कौ
उनि यामैं लै भाग ॥ या कौ फल सोइ मूल गहि
करनी गत विधिलाग ॥ १२२ ॥ न्यास ॥ भुज
कोटि वर्ग योग १६८ लव हर गुने तैं अए
१३५२ वड़े दूट १०० के वर्ग १०००० करि गुन्यौ
अए १३५२०००० यादू कौ सुह मूल नाहीं-
यातैं निकट मूल छांह पाई ३६७७ या मैं हर
८ और दूट १०० के वध ८०० कौ भाग लीनौ
ऐसैं ३६७७ पायो भाग फल सोई ४। ४३७
यही कर्न मान भयो ॥ अथ काल्पित भुज
अनेक कोटि कर्न उपजाइवे कौ सूत्र
॥ दूट भुजा मिति दून करि. दूजै दूट गुनाव ॥ ए
क रहित कृत दूट कौ. तामैं भाग लहाव ॥ १२३ ॥
लाभ तासु कौ कोटि है. कोटि दूट वध मांह ॥



भुजा घाट करि कर्ण लहि विनु करनी गत छांह
 ॥ १२४ ॥ उदाहरन ॥ वारिह भुज के खेत में
 जै जै कोटि रु कर्ण ॥ विनु करनी गत संभवै ते
 है विधि करि वर्न ॥ १२५ ॥ न्यास ॥ इष्ट भुज
 या को दूनी २४ दूने इष्ट २ सौं गुन्यो भये ४८
 इष्ट वर्ग एकरहित ३ को भाग लीनी पायो
 कोटि मान १६ पुनिया कौं इष्ट सौं गुन्यो भये ३२
 भुज १२ घटाये तै पायो कर्ण मान २० और
 तीने को इष्ट कल्पना कीने तै दूनी भुज २४ सौ
 गुने ७२ यामें इष्ट वर्ग एकरहित ८ को भाग लीने
 तै पायो कोटि मान १२ पुनिया कौं इष्ट ३ सौं गुन्यो
 भये २७ भुज १२ घटाये तै पायो कर्ण मान १५ ॥
 अथ द्वितीय प्रकार ॥ और इष्ट को
 भाग तै इष्ट भुजा कृत मांह ॥ इष्ट
 ऊन जुन दल लहौ कोटि कर्ण की छांह
 ॥ १२६ ॥ न्यास ॥ इष्ट भुजा १२ को
 वर्ग १४४ में और इष्ट २ की भाग लीनी

पाए ७२ तामें दृष्ट २ घटाये के दल कीनौ पा-
 यौ कोटि मान ३५ फिर दृष्ट जोरि कै द-
 ल कीनौ पायो कर्न मान ३७ चारि के
 दृष्ट करि २६।२० दृष्ट के दृष्ट करि ६।१५
 अथ कल्पित कर्न कोटि भुज उप
 जाइवे कौ स्तुत ॥ श्रुति दूनौ करि दृ-
 ष्ट गुनि तामै लीजै भाग ॥ दृष्ट वर्ग दृष्ट
 जोरि कौ मिलै कोटि कौ लाग ॥ १२७ ॥ कोटि
 दृष्ट वध हीन श्रुति जानौ भुजा प्रमान ॥ समित
 संभवे कोटि भुज इहि विधिसुघर सुजान ॥ १२८ ॥
 अथ या ॥ लै दृष्ट भुज कृत दृष्ट कौ कर्न दून
 मै भाग ॥ फल श्रुति अंतर कोटि फल दृष्ट
 घात भुज लाग ॥ १२९ ॥ उदाहरन ॥ कर्न बीस
 के कोटि भुज जिते जिते कहि सोइ ॥ विधि
 अनेक जे संभवे करनी राति नहिं होइ ॥ १३० ॥
 न्यास ॥ कर्न २० दूनौ ४० दृष्ट २ गुनि ८० यामें
 दृष्ट वर्ग एक चतुर् ५ कौ भाग लीने तें प्राई कोटि दृष्ट

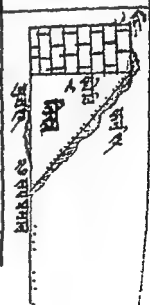
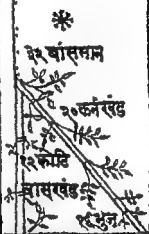


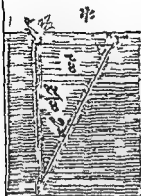
और कोटि १६ इष्ट गुणित ३२ में कर्न २० घाटि
 किये तै पायौ भुजमान १२॥ दूसरी न्यास
 कर्न २० दूने ४० में इष्ट २ वर्ग ४ एक जुत ५
 कौ भाग लीने ते फल ८ तै कर्नान्तर भयो
 कोटिमान १२ और फल ८ इष्ट २ वध १६
 भुजमान भयो ॥ और ३ के इष्ट में कोटि १६
 भुज १२ इहां भुज कोटि कौ नाम भेद है
 स्वरूप भेद नाही ॥ अथ कोटि भुज कर्न
 जानिये कौ सूत्र ॥ इष्ट दोह कौ वध
 दुगुन कोटि रू भुति कृत जोग ॥ भुज
 प्रमान जौ चाहिये वर्गन करै वियोग १९१
 न्यास ॥ इष्ट २१३ वध ६ दुगुन १२ यह को
 टि भई और इष्टन के वर्गन कौ जोग कर्न
 १९ असुवर्गीतर भुज ५॥ अथ कोटि
 कर्न योग कौ भिन्न जानिये कौ सूत्र
 भूमि वर्ग में बांस की आग लाभ सो पाह ॥
 बांस माहिं करि ऊन जुत दल भुति कोटि

कर्न २० दूने ४० में इष्ट ३
 वर्ग एक जुत १० कौ भाग
 लीने ते फल ४ तै कर्नान्तर
 भयो कोटिमान १६ और
 भागफल ४ इष्ट ३ वध १२
 भयो भुजमान १२ याको
 तासयें यह है किया और ते
 से सो इष्ट कल्पना करिये ना
 में धर्म ज्ञात सिद्ध होइ



घटाइ ॥ १३२ ॥ उदाहरण ॥ बांस हाथ ब-
 तीसै कोटि लखौ भुवभंग ॥ अग्रमूल
 खिचजौ धरा पाई सो रहै सगर ॥ १३३ ॥ बांस
 खंडे को मालकहु ॥ छीलक नगी मरार ॥
 एक कोटि इक करन सों दोऊ खंड विचार
 ॥ १३४ ॥ न्यास ॥ भुज १६ वर्ग २५६ बांस
 ३२ को भाग लाभ ८ बाको बांस में जोग
 बल कर्न २० शुरु लाभ बांस में ऊन हल
 कोटि १२ ॥ अथ भुज कर्न जोग
 और कोटि जनि तैं न्यारे न्यारे जा
 निवे को सूत्र ॥ भीत वर्ग में ब्याल को
 भाग लाभ सो पाइ ॥ ब्याल माहिं करिऊन
 नुत दल भुज कर्न यताइ ॥ १३५ ॥ उदाहर-
 ण ॥ चौपई ॥ नव कर को इक ऊन
 त भीत ॥ तापर गुर गावत गीत ॥ भी-
 त मूल तैं निकस्यो सांप ॥ सत्ताइस कर
 जाको माप ॥ देग दोन धनि सुनि अहि कान





॥ उलटि गह्यौ वह वेंन निदान ॥ कहि अहि
 कितनौ भुइं छुइ स्ह्यौ ॥ कितने उलटि सु-
 दादुर गह्यौ ॥ न्यास ॥ भीतर ८ वर्ग ८१
 सांप २७ को भाग फल ३ व्याल जोगार्ध २५
 कर्न भयौ अरु साम ऊनार्ध भुज भयौ १२

॥ अथ कोटि कर्नान्तर और भुज जा-
 ने नै न्यारे न्यारे जानिबे कौ सूत्र ॥

भुज कर्न में भुजि कोटि कौ अंतर हर फल
 लेहु ॥ अंतर में सो घाट बढ़ करि दल फल
 कहि देहु ॥ १३६ ॥ उदाहरन ॥ आध हाथ
 ऊंचौ जलज जल ऊपर मन रंज ॥ पवन
 लगे रुकि बूडि गौ दै कर पै सो कंज ॥ १३७ ॥
 ॥ कोटि कर्न कौ मान कहू सोई जल नले
 मान ॥ चलि बूडन रुकि कमल की भुज
 प्रमान सो जान ॥ १३८ ॥ न्यास ॥ भुज ३
 दरग ४ यामैं अंतर २ कौ भाग लीनौ-
 पायौ फल ८ यामैं अंतर २ घाट करि

दल कीनौ पायो कोटि मान १५ और

अंतर जोगार्थ कर्न मान पायो १६

अथ कछु कोटि और भुज जाने ते
तीनो प्रमान जानिये को सूत्र ॥

ताड़ ताल के अंतरहि. ताड़ घात करि ले.

॥ फल में दूनों ताड़ हर कपि उछलनि

कहि देह ॥ १३८ ॥ उदाहरन ॥

सौ कर के डूक ताड़ ते. उतस्यो डूक कपि

धाड़ ॥ हैसै कर पै ताल लाखि. जल हित

पहुंच्यो जाड़ ॥ १४० ॥ तरु पर ताकी चान

री. पहिलै उड़ी अकास ॥ पुनि श्रुति पथ

सम चाल कै. पहुंची निज पति पास ॥

१४१ ॥ ताकी उछलनि मोहि कहू. शेष

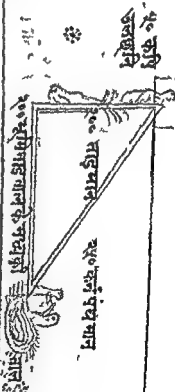
कोटि को सोड़ ॥ करन मान पुनि वेग कहू.

निहि मिलि सम गति होड़ ॥ १४२ ॥ न्यास

ताड़ रु ताल को अंतर १०० ताड़ मै घात

१०००० हुने ताड़ २०० को भाग लीये पाई

॥ कोटि के प्रमान जल गहर
॥ और कर्न के मान कम
ल जाल है ॥

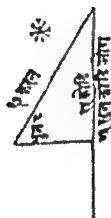


कपि उल्लानि ५० याकीं ताड़ में जोड़े तैं
भयो कोटि मान १५० यानें अरु भुज तैं पायो
कर्न मान २५० समगत भई ३००

अथ कोटि भुज जोग जाने तैं और
कर्न जाने ते न्यारे प्रमान जानिबे

कोटि ॥ वाहु कोटि जुत हुतहि घटि
जुत हुत हुने मांह ॥ शेष सूल जुत घाट
जुत सरध कोटि भुज बांह ॥ १४३ ॥
उदाहरन ॥ तैरु जहं भुज कोटि जुत
सत्रह करन प्रमान ॥ पृथक पृथक तहं
कोटि अरु भुज के मान बरयान ॥ १४४ ॥

न्यास ॥ कर्न वर्ग कोटि ५०८ यानें भुज
कोटि के जोग की दग ५१८ चढाये तैं शेष
४८ के नून ३ में भुज कोटि को जोग नू को
जोग दल भयो कोटि मान १५ अरु नून
भुज कोटि नुनान्तर १६ दल भुज मान ८
॥ अथ नंदनानाथी सूत्र ॥ कोटि दोह



के घात में. कोटि जोग को भाग ॥ लाभ सुलं
 व प्रमान है कर्न जोग भुजलाग ॥ १४५ ॥ कोटि भु
 जा के घात में कोटि जोग को भाग ॥ फल भुज
 खंड प्रमान कह. लंब दुहूं विसलाग ॥ १४६ ॥ न
 दाहरन ॥ पंदरह दस है कोटि जहं. दृष्ट भुजा
 पर होइ ॥ तिहिं भुज जुव थल लंब कह. अरु
 भुज खंडे दोइ ॥ १४७ ॥ न्यास ॥ दुहूं कोटि को
 घात १५० तामें कोटि जोग २५ को भाग फल
 सोई लंब प्रमान पायो ॥ अरु याकी दृष्ट भुजा
 ५ को दोनौ कोटि सौगुन्यो भये ॥ १५१ ॥ १५० तामें
 कोटि जोग २५ को भाग लीने तें पाए भुज खंडे
 दोइ २१३ और दृष्ट भुजा दस राखिये. तो खंडे
 ४१६ ॥ अथ क्षेत्र शुद्धा शुद्ध परीक्षा
 खेत चतुर्भुज विभुज में. असम भुजनि को
 जोग ॥ जहां खेत संभव कहैं. बडे अज्ञते लोग
 ॥ १४८ ॥ खेत चतुर्भुज में भुजा. वारह. छह
 है तीन ॥ जहां असंभव खेत को. विन करि माप



खंडे खंडे खंडे
 खंडे

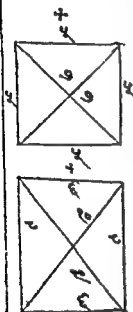
अथ क्षेत्र शुद्धा शुद्ध परीक्षा
 खेत चतुर्भुज विभुज में. असम भुजनि को
 जोग ॥ जहां खेत संभव कहैं. बडे अज्ञते लोग
 ॥ १४८ ॥ खेत चतुर्भुज में भुजा. वारह. छह
 है तीन ॥ जहां असंभव खेत को. विन करि माप

पाद १ ताकीनाम आवाधा

भूमि में अंतर करि दल कीनौ भई दूसरी
 आवाधा ५ भुजें तेरह की फेर भुज सरु स्वावा
 धा के दर्जन के अंतर को मूल पायो संवमान
 १२ या कौ भूमि में गुनि दल कीनौ पायो खेत
 को स्पष्ट फल ८४ ॥ अन्य विधि ॥ तीनौ
 भुज कौ जोरि कै दल करि धरि दल चारि
 ॥ त्रिभुज तीनटां घाटि करि शेष परस्पर
 सारि ॥ १५५ ॥ ताकौ मूल निकासि लहि
 शुद्ध त्रिभुज फल सोइ ॥ ये यह विधि चोवा
 हु में न करि अशुद्ध फल सोइ ॥ १५६ ॥
 न्यास ॥ तीनौ भुज के जोग ४२ को दल २१
 चारि तांव धरि कै तीनौ भुजा घाटि करि कै
 शेषांक परस्पर गुनि फल पायो ७० ५६ ऐसे
 घाट कीनौ शेष
 गुने सर ७० ५६
 या कौ मूल ८४ सोई स्पष्ट फल जो पाहि लें
 भयो हो ॥ अथ चतुर्भुज खेत फल



पाकेर को स्पष्ट फल ८४ जो
 जा त्रिभुज में कोटि भुज दर्ज हो
 हि ना त्रिभुज में कोटि भुज घा
 त दल स्पष्ट फल होइ यह सु
 गत विधि है सो संव आ
 वाधा उपजाए न होइ है
 सर तीनौ भुज को जोरि कै
 दल करि याह सूत्र करि होइ
 है जैसे या त्रिभुज में संवत
 है खंडे भूख सोई खंडे भु
 ज कोटि रूपी भूखतव दो
 नों त्रिभुज न को कोटि भु
 ज घाट दल पाए ३० ५४
 या कौ जोग भयो सोई
 सब खेत को स्पष्ट फल ८४
 सब जोर आवाधा उप
 जादे को तात्पर्य यही है
 कि लंब और आवाधा
 कोटि भुज रूपी है ॥



जहां बराबर चारिभुज. श्रुति है तुल्य सु
 जान ॥ तुल्य चतुर्भुज खेत है. ताको नाम
 सुजान ॥ १५७ ॥ आयत ॥ है है स
 न्मुख को भुज. जहां बराबर होइ ॥ श्रुत
 है ताके तुल्य है. खेतायत कहि सोइ ॥
 १५८ ॥ इन दोनी विधि खेत में. करै कोटि
 भुज घात ॥ लाभ खेत की स्पष्ट फल जानि
 लिह विख्यात ॥ १५९ ॥ उदाहरन ॥
 पांच पांच के चारिभुज करन सात कछु
 जासु ॥ आयत ॥ छह छह वंसु यंसु
 चारिभुज. दस श्रुत फल कहि तासु ॥ १६० ॥
 न्यास ॥ तुल्य चतुर्भुज में कोटि ५
 भुज ५ को बध खेत स्पष्ट फल २५ और
 आयत चतुर्भुज में कोटि ८ भुज ६ को
 बध स्पष्ट फल ४८ ॥ अथ अन्य सूत्र
 बाहु बराबर चारि भुज. असम करन
 निहि खेत ॥ तहं नाना फल संभवै. श्रुति

घट बढ़ मिति हेत ॥ १६८ ॥ इक श्रुति ताकी क
 ल्पि करिता की कृत करि हीन ॥ अज कृत चौगुन
 माहि फल मूल द्वितीय श्रुति कीन ॥ १६९ ॥ दुहुं
 करन वध दल लहौ फल सपष्ट दाहिं खेत ॥
 असम बाहु श्रुति खेत कौ अब सुनि फल वित
 येत ॥ १७० ॥ सूधी अज कौ भूमि कहि सन्मुख
 अज मै जोरि ॥ लंब माहि पुनि घात करि तिहिं
 दल नै फल तोरि ॥ १७१ ॥ प्रथम उदाहरन
 ॥ चासी अज पच्चीस मै दूक श्रुति कल्यो
 तीस ॥ दूजे श्रुति की मिति कहौ खेत लाभ
 पुनि ईस ॥ १७२ ॥ न्यास ॥ अज २५ के वर्ग
 ६२५ ॥ के चौगुने २५०० मै कर्न ५० को वर्ग की
 घाटि किये तै शेष १६०० को मूल ४० दूसरी
 कर्न भयो ॥ दोनी कर्न कौ घात १२०० को
 अर्ध भयो खेत फल ६०० ॥ दूसरी
 उदाहरन विषम चतुर्भुज कौ ॥
 बाहुस छिति ग्यारह बदन है अज तेरह



बावली

जो रेखा परिधि के है तब
कोटे बड़े करे भारे लाकी ज्या
नया जीवा तशा है शरु अ
हं जीवाते परिधि पर्यंत जो
व्यास को दूक है नाकी शर
तब है शरु वा परिधि के
इन को नाम धु है ॥



स्थूल १५४ गोल मध्य घन फल पायी ऐसे
स्थूल १३२ ॥ अथ व्यास शर
ज्या तै शर ज्ञान सूत्र ॥ ज्यारु व्यास
के जोग अरु अंतर बध को मूल ॥ व्यास
मांहि छटि शेष दल शर कहि ताहि न भूल
॥ १७४ ॥ पुनि शर छट करि व्यास मै शेष के
शर घात ॥ नासु मूल कौंदु गुन कहि ज्या
परमिति विख्यात ॥ १७५ ॥ पुनि ज्या दल के
बरा मै शर हर फल शर जोरि ॥ व्यास लास
लाहि परस्पर मीनौ जानि बहोरि ॥ १७६ ॥
उदाहरन ॥ ज्या मिति छह दस व्यास
मिति कहु शर परमिति नासु ॥ शररु
व्यास तै ज्या कही ज्या शर तै कहु व्यास
१७७ ॥ व्यास १० ज्या ६ तै
शर १ पुनि शर व्यास तै पाई ज्या ६
तै व्यास १० ॥ अथ वृत्त खेते रे
भुजादि नव भुज पर्यंत

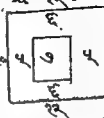
उदाहरन की व्यास व्या
स १० ज्या ६ जोग १६ अंतर
१६ से पुनि तै शर ६५ को मूल
तै व्यास व्यास तै घात
तै शर व्यास को दल पायो शर
मना करे शर १ व्यास घात
करीने शर ५ को शर १ को
पुनी पावे शर को दल ३ को
दुगुनी पायो ज्या ममान ६
करे ज्या दल ५ को मूल ५ तै
शर १ को शर १ को मूल ५ तै
शर १ को शर १ को मूल ५ तै
व्यास नासु

जानिवे को सूत्र ॥ दोई सहस्र मिति
 व्यास को, वृत्त खेत जो होइ ॥ सम त्रिभुज
 दिनवांत के, भुजमिति कह सब सोइ ॥ १९८ ॥
 बुद्ध इन के गुणक, तिन सै व्यास गुनाव
 एक लष बीस सहस्र को, आग लेइ फल पय
 ॥ १९९ ॥ वृत्त व्यास २०००

खेव	गुणक	भाजक	एक भुज को प्रमाण
विभुज	२०३८२३	२२००००	$\frac{२०३८२३}{२२००००}$
चतुर्भुज	८४८५३	२२००००	$\frac{८४८५३}{२२००००}$
पंचाक्ष	७०५३५	२२००००	$\frac{७०५३५}{२२००००}$
षट्भुज	६००००	२२००००	$\frac{६००००}{२२००००}$
सप्ताक्ष	५२०५५	२२००००	$\frac{५२०५५}{२२००००}$
अष्टाक्ष	४५८०२	२२००००	$\frac{४५८०२}{२२००००}$
नवाक्ष	४२३२	२२००००	$\frac{४२३२}{२२००००}$

अथ चाप क्षेत्रफल सूत्र ॥ जीवाभा

* जोगफल कहिए
मुख और तल की लंबाई
जोर के मुख तल की जो
ऊर्ध्व के जोग में गुने ते जो
फल १५ *



लीनो पायो फल ११।६।३। आपुस में गुने
ते पायो खात घन फल १६८० ॥ अथ विन
सीढ़ी को चतुर्भुज खात फल सूत्र
मुख फल तल फल जोग फल तीनों फल
को जोग ॥ ताको छठवों अंश गुनि पिंड माहि
फल भोग ॥ १८५॥ उदाहरन ॥ मुख रवि
वस तल पांच छह सांत उंचाई होइ ॥
तासु घात घन हस्त फल, नीकें करि कह
सोइ ॥ १८६॥ न्यास ॥ मुख लंबाई १२
चौड़ाई १० फल १२० तल तूल ६ विस्तार ५
फल ३० दोनों को तल जोग १८ विस्तार
जोग १५ फल २२० ऐसे भये तीनी फल
१२०।३०।२२०। याको जोग ४२० याको
छठवों अंश ७० ताको सांत उंचाई सौं गु
न्यो पायो खात घन फल ४८० या आंति
के छत खातहू को याही विधि की फल
आनिये ॥ अथ सूची अग्र खात फल

* घन हस्त कहिए जा पिंड
की लंबाई चौड़ाई गहराई
तीनी य एव दोहि
* जादत खात की मुख
आस १५ और परिधि ४४
होइ और तल व्यास
अर परिधि २२ होइ और
रेख १२ ता खात की मु
ख फल भयो १५४ और
तल फल भयो ३० और
दोनों परिधि जोग ६६
आस जोग २२ याको
फल ३४८ ऐसे तीनों
फल भए १५४॥३०॥६६८
तीनी को तल छेद करि
जोने में भए १०८३ या
की छठवों अंश १२९
याको १२ वेध सी
उन्नीपायो छत

लहो. सवै बुद्धि बल छाह ॥ १८० ॥ उदाह-
 रन ॥ ईंट लंबाई पौन कर चौड़ाई कर आध
 ॥ उच्च आठवों अंश जिहिं घन फल ताको
 साध ॥ १८१ ॥ आठ लंबाई जासु चित् पांच
 चौड़ाई मान ॥ तीन हाथ जिहि उच्च कहु
 ईंट तर प्रमान ॥ १८२ ॥ न्यास ॥ ईंट
 लंबाई ३ चौड़ाई ३ उंचाई ३ घन फल ईंट
 को ३ चित लंबाई ६ चौड़ाई ५ उंचाई ३
 घन फल १२० आसैं ३ को भाग पाई ईंट मिति
 २५६० अरु ३ में ३ को भाग पाई तर मिति
 २४ ॥ अथ ककच विबुहार ॥ अग्र
 मूल जुत दल गुनी काठ दल नैं जोड़ ॥ पुनि
 चौरनि सौं गुनि हरो, चौबिस रूत कर सोड़
 ॥ १८३ ॥ उदाहरन ॥ सोरह अग्ररु चौंस
 जड़ सौ अंगुल जिहि दल ॥ चारि धार
 चीखी सु कहु कै कर चिसौन मूल ॥ १८४
 न्यास ॥ काठ पिंड अग्र मूल जोग ३६

अग्र १६ अंगुल

लंबाई २० अंगुल

चौबिस पाँच

मूल ३६ अंगुल

चौड़ाई १२ अंगुल



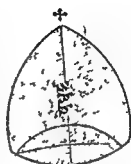
उन्चाई १६ अंगुल

* स्तूप अन्न बना मकर
जय गेहूँ आदि: गुनुकुल
कहिए राजरा तिल ल
सी आदि: मध्य कन कहि
ए चावर आदि नो कन ॥

* परिधि सै हरकी भाग
लीयेत जो कल पाइए ता
फल की परिधि के छठवें
अंश के बराग सी गुने धन
फल पाइए ॥

दल १८ लंबाई १०० की घात १८०० पुनि
चीरनि ४ करि गुन्यौ ७२०० चौवीसकौ वर
५७६ करि भागलीनी पायौ कर प्रमान १०
साढ़े बारह हाथकी चिराईकी मजूरी दी
जिए ॥ अन्य ॥ सम मूलाग्र जु पिंड तिहि
करि चौड़ाई घात ॥ पुनि चीरन पुनि हर
कहे चौविस कृत करितात ॥ १८५ ॥ उदा-
हरन ॥ बतैसे अंगुल चौड़ाई सोरह पिंड
जुदारु ॥ कैकर आड़ी सो विस्यौ. नवें ठां
कस्यौ विदारु ॥ १८६ ॥ न्यास ॥ चौड़ाई १२
पिंड १६ घात ५१२ पुनि चीरन ४ की वध
४६०८ यामें ५७६ की भाग पाए कर ८ ॥
अथ राश विवहार ॥ पूल मध्य अउ
कन परिधि दस शिव नव क्रम हारि ॥
ताहि परिधि पटलव घरा सौं गुनि घन
फल धारि ॥ १८७ ॥ उदाहरन ॥
मस धरनी पर अन्न की, राश परिधि जो

साठ ॥ तहां तीन विधि अन्न के धन फल को
 कह पाठ ॥ १८८ ॥ ^५न्यास ॥ स्थूलान्न राश
 परिधि ६० ताको दसों अंश वैधमयो ६
 याको परिधि षटलव १० वरा १०० नैगुन्यौ
 गायी धन फल ६०० ऐसैं अनुधान्न परिधि
 ६० वैध ६०० सौ १०० नैगुन्यौ ६००० धन
 फल ^{५५५}चावर आदि मध्य धान्न परिधि
 वैधगुनित ६० सौ १०० गुनित ६०००—
 धन फल ६६६ ॥ ३ ॥ ^५अन्यस्तु ॥
 भीतर लगी कन राश की परिधि दुगुन करि
 हर ॥ भीतर कोन सु चैगुनी, बाहिर कोन
 सु फेर ॥ १८८ ॥ चारि तिलैव गुनि पुनि-
 सवन पूरय विधि फल लेहु ॥ निज निज
 गुन तिहि फल हि हरि, सब धन फल
 कहि देहु ॥ २०० ॥ उदाहरन ॥ भीतायि
 त कन फल कहौ, परिधि जासु की तीसै
 पंद्रह भीतर कोन की बाहिर पैतालीस ॥



परिधि ६०

वैध कहिए सममूमिनि
 राश्याय की उंचाई ॥

भीतर लगी राश



५५५
 भीतर कोन
 बाहिर कोन

चौड़ाई १२ अंगुल



चौड़ाई

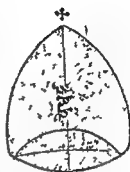
उन्चाई १६ अंगुल

* स्थूल धन चला मल
जब रोई आदि: अनुकूल
कहिए बालरा तिलस
सौ आदि: नम्र कन कहि
ए बाबर आदि जो कन ॥

* परिधि में हरकी भाग
लीये हैं जो फल पाइए ता
फल की परिधि के छठवें
अंश के बराबरी गुने फल
फल पाइए ॥

दल १८ लंबाई १०० की घात १८०० पुनि
चीरनि ४ करि गुन्यौ ७२०० चौबीसकौ धर
५७६ करि भाग लीनौ पायौ कर प्रमान १९
साढ़े बारह हाथ की चिराई की मजूरी दी
जिए ॥ अन्य ॥ समभूलागुजु पिंड तिहि
करि चौड़ाई घात ॥ पुनि चीरन पुनि हर
कहे चौविस कृत करितात ॥ १८५ ॥ उदा-
हरन ॥ वर्तिसे अंगुल चौड़ाई सोरह पिंड
जुदार ॥ कैकर आड़ी सो चित्सी. नव ठां
कस्यो विदार ॥ १८६ ॥ न्यास ॥ चौड़ाई
पिंड १६ घात ५१२ पुनि चीरन ८ की वध
४६०८ यामें ५७६ की भाग पाए कर ८ ॥
अथ राश विवहार ॥ पूल नम्र धन
कन परिधि दस शिर्वे नव क्रम हारि ॥
ताहि परिधि पटलव बरा सौं गुनि घन
फल धारि ॥ १८७ ॥ उदाहरन ॥
सम धरनी पर अन्न की राश परिधि जो

साद ॥ तहां तीन विधि अन्न के धन फल को
 कह पाठ ॥ १८८ ॥ ^३न्यास ॥ स्थूलान्न राश
 परिधि ६० ताको दसों अंश वेध भयो ६
 याको परिधि घटलव १० चरग १०० नै गुन्यौ
 पायौ धन फल ६०० ऐसे अनुधान्न परिधि
 ६० वेध ६० सौ १०० नै गुन्यौ ६०० धन
 फल ^{५६५} ११ चार आदि मध्य धान्न परिधि
 वेध गुनित ६० सौ १०० गुनित ६०००—
 धन फल ६६६ १३ ॥ अन्यस्तु ॥
 भीतलगी कन राश की परिधि दुगुन करि
 हर ॥ भीतर कोन सु चौगुनी बाहिर कोन
 सु फेर ॥ १८९ ॥ चारि बिलैव गुनि पुनि-
 सवन पूरव विधि फल लेहु ॥ निज निज
 गुन तिहि फल हि हरि, सब धन फल
 कहि देहु ॥ २०० ॥ उदाहरन ॥ भीतामि
 त कन फल कहौ, परिधि जासु की तीस
 मंदर भीतर कोन की बाहिर पैतालीस ॥



परिधि

वेध कहि सममिति
 राश्याश को उच्चाई ॥

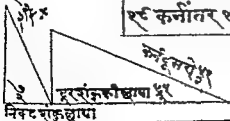
भीतलगीराश



* पहिल गुनक २
दूसरा गुनक ६०
तीसरा गुनक ६०
* आकहीर छाया
* रांकु श्रुतें छाया श्रुत
प्रथम द्वा को नाय तथा
सुन करन ६० ओ कोड
दीपक जोति में ६० गुनकें
रांकु की दीप निकट रांकु
कि छाया की दूर दूर
रे रांकु के दूर ही लागे
श्रुत दोनो रांकु को छा
या तथा तथा करन आ
मि कै दोनो छायांतर का
कर्नांतर कहि देह और
छाया दोनो को समान
बुद्ध ताकी यह सज्ज है ॥

२०२ ॥ न्यास ॥ आदि ३० की दूनी ६० दूसरी
१५ की चौगुनी ६० तीसरी ४५ की ६० गुनी ६०
तीनौ साठ को पूरय दिधि क्रिया करि पायौ
फल ६०० निज निज गुन को यामें भागलीने
पायौ घन फल ३० ॥ २५० ॥ ४५० ॥
अथ छाया विदहार ॥ आंतर श्रुति
अंतर बरग. तिन को अंतर जोड ॥ ता करि
भाग गुली नियो, चौबिस कृत मै सोड ॥ २०२
॥ फल में सुत करि एक पुनि मूल श्रुतांतर
घात ॥ तामें आंतर घाट दल. निकट छाया
यिख्यात ॥ २०३ ॥ दूजी छाया दूर ही आंतर
जुत दल होड ॥ बीज नाशित धित पति-
जिन्हें आउत पति कहै सोड ॥ २०४ ॥
उदाहरन ॥ कर्णांतर तेरह बहुर छाया
तर उन्नीस ॥ दहूं रांकु की आकही. जो तुम
गनिता छीस ॥ २०५ ॥ न्यास ॥ छायांतर
१८ कर्नांतर १३ दोउन के वर्गन को अंतर

प्रदीप



१८२ या करि चौबीस के वरस ५७६ में भाग
 फल ३ एक जीत्यो ४ मूल २ कर्नांतर १३ सौं
 गुन्यों २६ नैं छायांतर १८ चाटि जेप ७ दल
 ३ यह दीप निकट शंकु की छाया भई और
 २६ सैं १८ जोना दल पाई दूसरे शंकु की
 छाया ४५ और कर्न मिति को ज्ञान चाहिए
 नौ मूल २ कौ छायांतर १६ सैं गुनि ३८ में
 कर्नांतर जुत घट दल पाइये कर्न मिति
 ३५ । ५२ ॥ अथ दीपोच्च ज्ञानार्थ
 सूत्र ॥ शंकु दीप तल पंतरी गुनौ शंकु
 करि जानि ॥ आ करि हरि पुनि शंकु जुत
 दीप उंचाई जानि ॥ २०६ ॥ उदाहरन ॥
 दीप तलांतर शंकु सौं, अंगुल सतर दोइ
 ॥ सोरह भारवे शंकु निहिं, दीप उच्च
 कह सोइ ॥ २०७ ॥ न्यास ॥ ५७२ शंकु
 गुनि ८६४ में छाया १६ कौ भाग फल ५४
 शंकु १२ जुत पाई दीप उंचाई ६६ ॥

* जा शंकु की छाया प्रमान
 और शंकु प्रमान और
 शंकु तै दीप तलांतर कौ
 प्रमान जानिए वहां दी
 पोच जानिये कौ सूत्र ॥

*



दीप उंचाई सूत्र



दीप तल तै शंकु तलांतर १२ अंगुल

शंकु प्रमाण जानने का
छाया जानिये की सूत्र ॥
प्रमाण नलांतर को सूत्र ॥

नदी होइ और उह शंकु
के नलांतर भूमि के प्रमाण
जानिए और दोनी छाया
हू की प्रमाण जानिए
नदी दीप नलांतर या दो
शेखर जानिये की सूत्र ॥
हू शंकु के अंतर में
हू छरी छाया जोर के
प्रमाण छाया घटाए न
छाया अशंतर को शर
होइ ॥

प्रमाण छाया सौ गुनि के
छायांतर को भाग लेहि
तो प्रमाण छाया घटावे
नदी प्रमाण शंकु नलांतर
भूमि की शान होइ और
नी छाया अशंतर को
हू छरी छाया सौ गुनि के
छायांतर को भाग लेहि
नदी हू शंकु तल
नदी हू शंकु तल
नदी हू शंकु तल
नदी हू शंकु तल

अथ छाया जानिये की सूत्र ॥ दीप
नलांतर शंकु सौ. करि पूरव विधि छात ॥
॥ दीप उंचाई शंकु घटि करि हरि भाल्ड
तात ॥ २०८ ॥ न्यास ॥ भू शंकु वध ८६४
दीपोच्च शंकु हीन ५४ को भाग फल पाई ॥
छाया मिति १६ ॥ अथ दीप नलांतर
ज्ञान सूत्र ॥ शंकु घाटि दीपोच्च करि. आ-
गुनि नर को भाग ॥ दीप शंकु तल बीच की
भूमि लहो वड़ भाग ॥ २०८ ॥ न्यास ॥ शंकु
घाटि दीपोच्च ५४ भा १६ गुनि ८६४ शंकु
१२ को भाग फल पायो दीप नलांतर ॥ ७२ ॥
अन्य सूत्र ॥ भू अग्रन के अंतरै. छाया
करि गुनि लेहु ॥ अंतर हरि आ घाटि
करि. भू प्रमाण कहि देहु ॥ २१० ॥ भूमि
शंकु के घात नै. छाया को लै भाग ॥ लाभ
माहिं करि शंकु जुन. दीप उंचाई लाग
२११ ॥ उदाहरन ॥ है कर अंतर शंकु है

वसु बरिह द्वै छाह ॥ दीपतरांतर उच्च पुनि
 कही समहि मन साह ॥ २१२ ॥ न्यास ॥
 दुहं शंकु की अंतर द्वै करके अंगुल ४८-
 दूसरी छाया १२ जोरे तें ६० में प्रथम छाया
 ८ घटाये तै पावौ छाया अंतर ५२ को
 प्रथम भा ८ सौं गुनि ४१६ में छायांतर ४ को
 भाग फल १०४ में छाया ८ घटाये तें शेष
 पावौ दीपतल तें प्रथम शंकु तलांतर भूमि
 ६६ यामें द्वै करके ४८ अंगुल जोरे तें पावौ
 दूसरी भूमि मान १४४ अथवा छायांतर ५२
 छाया १२ गुनित ६२४ में भांतर ४ को भ ग
 १५६ में १२ छाया घटाये तें वही १४४ दोनौं
 भूमि ६६ १४४ । यह शंकु गुनित १९५२ ।
 १९२८ में छाया ८ १२ को भाग फल १५४ ।
 १४४ शंकु जोरे तें पाई दुह शंकु ते दी-
 पोन्नता १५६ १५६ में २४ को भाग लीये
 तें पाईये दीपोन्न कर प्रमान १५

४-

दीपोन्न १५६



१५६

१५६

निकट शंकु तल तें दीपनलातर ६६

गोली पांर को पांर ८८

श्रीमच्छृङ्गाररायडालचंदस्याज्ञा
परिपालक रायचंद नागरेणवि
हित पाटी परिपाठ्यानु सारेण—
गणितसार ग्रंथे स्थायाव्यवहार
वर्णनं सप्तमः प्रकाशः ॥
दोहराछंद

प्रभुङ्गाप पूरन भयोद्भुत ग्रंथ रत्नाल ॥
अनुभव रत्न सुख सिंधु यह पूरन गनि ननि
जाल ॥ २१३ ॥ विक्रम सम्यत् १८२८ राज
जुगल, वसु ससि शुक्लवार ॥ सांवनसित
सातै सुखद गनित सार खवतार ॥ २१४ ॥
संपूरन पोथी लिरयी. लिख यह काशिप
दीन ॥ पिय मन रुचि कारन रुचिर, चिस्
लीं होछु नवीन ॥ २१५ ॥ तिथ तेरस
पुम नरदव पित, माह माह रवि वार ॥
भवो भेंट रुपजाप फे, गनित सुधारस
सार ॥ २१६ ॥ रत्नाल हर सोहन दास ॥